Department : HINDI		
Academic Year : 2022-23		
Sr. No.	**Programme Code**	**Name of the Programme**
01.	HIUDE	BA HINDI 4 th SEM (अधिन्यास कार्य)

Following students have carried out their Project work/ Internship/ Field Project/Industrial Training for the academic session 2022-23

Si.No.	**Name of the Students**	**Page No ……. To ……..**
1.	ABHISHEK KASHYAP GGV/21/00201	3 TO 5
2.	ALOK KUMAR SAHU GGV/21/00203	6 TO 8
3.	AMAN KUMAR KHATERJEE GGV/21/00204	9 TO 11
4.	ANKIT KUMAR TANWAR GGV/21/00205	12 TO 14
5.	DEEPTI VAISHNAV GGV/21/00206	15 TO 17
6.	INDU DEVI GGV/21/00207	18 TO 20
7.	JAYALAKSHMI GGV/21/00208	21 TO 23
8.	KABIR SHANKAR GGV/21/00209	24 TO 26
9.	MUSKAN SAHU GGV/21/00211	27 TO 29
10.	PRAGYA CHANDRA GGV/21/00212	30 TO 32
11.	PREETI PATEL GGV/21/00214	33 TO 35
12.	PRINCE VANI GGV/21/00215	36 TO 38

13.	PRIYANKA GGV/21/00216	39 TO 41
14.	RITU KOSARIA GGV/21/00217	42 TO 44
15.	SAKSHI YADAV GGV/21/00218	45 TO 47
16.	SHASHIKANT GGV/21/00219	48 TO 50
17.	SHUBHAM KUMAR GGV/21/00220	51 TO 53
18.	SOUMYA TAMRAKAR GGV/21/00221	54 TO 56
19.	SUMIT KUMAR DHRUV GGV/21/00222	57 TO 59
20.	SUPRIYA KUMHAR GGV/21/00223	60 TO 62
21.	SURAJ KUMAR BANJARA GGV/21/00224	63 TO 65
22.	TEJBHAN GGV/21/00225	66 TO 68
23.	TRILOK VANI GGV/21/00226	69 TO 71
24.	VASUDEV SINGH SORTHE GGV/21/00227	72 TO 74
25.	VIKRAMADITYA GGV/21/00229	75 TO 77
26.	YOGESH GGV/21/00230	78 TO 80
27.	YOGESHWAR GGV/21/00231	81 TO 83
28.	YOGITA BAIGA GGV/21/00232	84 TO 86

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

सत्रीय लेखन कार्य

सत्र - 2022-2023

दिनाँक - 10-07-23

विषय :- अधिन्यास कार्य

नाम :- अभिषेक कश्यप

कक्षा :- बी.ए. द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेम.)

विभाग :- हिन्दी

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

मार्गदर्शक
डॉ. राजेश मिश्र

Date ______ Topic ______ Page ______

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ =>

देवनागरी या नागरी लिपि में कुछ विशिष्ट गुण है जिनके कारण यह देश के अधिकांश भागों में प्रयोग की जाती है। जाती । अपनी विशेषताओं के कारण ही संविधान सभा द्वारा देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया गया। उन्नीसवीं सदी के मध्य में तत्काल हाईकोर्ट के जस्टिस शारदाचरण मित्र ने एक प्रस्ताव रखा था कि इन भाषाओं में आदान-प्रदान बढ़े। इसके लिए उन्होंने कलकत्ते में ही 'एकलिपि-विस्तार परिषद' की स्थापना की थी। हालांकि उनका यह प्रयास सफल न हो सका। नागरी लिपी लिपि की कुछ विशेषताओं के कारण यह संभावना हमेशा बनी रहेगी कि जैसे यूरोपीय भाषाएँ भी नागरी को स्वीकार करें। हालांकि होनी चाहिए। देवनागरी लिपि की विशेषताओं को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझते हैं।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ =>

नागरी लिपि की विशेषताएँ की बात करें तो सबसे पहली बात जो ध्यान में आती है वह यह है कि इसके ध्वनि-प्रतीक संस्कृत व्याकरण के अनुसार वैज्ञानिक रूप से इस प्रकार वर्गीकरण वर्गीकृत हैं।

अजय माला

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

एक स्थान - विशेष से उच्चर उच्चरित होने वाले अक्षर एक ही वर्ग में सम्मिलित हैं। मनुष्य के मुख-विवर में से ध्वनियों के उच्चारण में सहायक स्थानों का अगर वैज्ञानिक विधि विवेचन किया जाये तो उसका क्रम कई प्रकार से देखा जाता है।

(1) ध्वनिम और लेखिम एकरूपता =>

नागरी की दूसरी विशेषता है बोलने और लिखने में अधिक से अधिक समानता का होना। हालांकि बोलने बोलने और लिखने में पूरी एकरूपता कठिन है किंतु देवनागरी में अपेक्षाकृत यह साम्य अधिक दिखाई पड़ता है। उदाहरण के लिए रोमन लिपि में 'उ' की ध्वनि का बोध 'U' से भी होता है (Put) और द्वित्व ओ (OO) से भी (Foot)। इसके अलावा 'इ' के लिए कहीं 'I' (Ring, This)। इसके साथ देखा जाय तो एक ही अक्षर कई ध्वनियों का सूचक है। जैसे - U 'अ' (but) की ध्वनि भी देता है और 'उ' (Put) को भी। देवनागरी लिपि में ऐसी अवैज्ञानिकता नहीं है।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

नाम - आलोक कुमार साहू
कक्षा - बी.ए. ऑनर्स चतुर्थ सेमेस्टर
विभाग - हिन्दी
विषय - भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा (अधिन्यास कार्य)
अनु.क्र. - 21004103

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

:: प्रस्तुतकर्ता ::
आलोक कुमार साहू

:: मार्गदर्शक ::
डॉ. राजेश मिश्र

Date ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐ Topic _____ Page 001

"देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास"

रूपरेखा :- (1) प्रस्तावना

(2) देवनागरी लिपि का इतिहास : उद्भव और विकास तथा नामकरण

(3) देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

(4) देवनागरी लिपि : गुण व दोष

(5) देवनागरी लिपि की वर्तमान स्थिती

(6) देवनागरी लिपि का मानकीकरण

(7) देवनागरी लिपि में सुधार के प्रयास

(8) निष्कर्ष

(1) प्रस्तावना - देवनागरी लिपि का परिचय करने से पूर्व लिपि की अवधारणा को समझना अति आवश्यक है। सामान्य शब्दों में लिपि से अभिप्राय है - भाषा को लिखित रूप देने का साधन अर्थात् 'भाषा को दृश्यमान तथा स्थायित्व प्रदान करने वाले यादृच्छिक परंपरागत वर्ण प्रतीकों की व्यवस्था ही लिपि है।' भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है, इसके द्वारा हम मौखिक तौर पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, किंतु जब हमें विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने की आवश्यकता होती है तब लिपि के द्वारा ही यह संभव हो पाता है अतः कह सकते हैं कि भाषा को लिखित रूप देने के लिए लिपि आवश्यक है।

विश्व की सभी भाषाओं की अपनी-अपनी लिपि होती है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी आदि भाषाएँ रोमन लिपि में, पंजाबी भाषा गुरुमुखी लिपि में, उर्दू भाषा फारसी लिपि में तथा हिंदी, संस्कृत, नेपाली व मराठी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इस प्रकार परिचय के रूप में कह सकते हैं कि 'देवनागरी लिपि वह लिपि है जिसमें हिंदी, संस्कृत, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं तथा इसे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी के लिए लिपि के तौर पर सुनिश्चित किया गया है।'

गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग)

नाम :- अमन कु. खटर्जी

कक्षा :- बी.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर)

विषय :- भाषिन्यास कार्य

विभाग :- हिन्दी

रोल नं. :- 21004104

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

मार्गदर्शक
डॉ. राजेश मिश्रा

"देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास"

हिन्दी व संस्कृत की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण लिपि है। संविधान में इसे राज लिपि का पद प्राप्त है। हिंदी व संस्कृत का संपूर्ण साहित्य इसी लिपि में मिलता है। पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं का साहित्य भी इसी लिपि में मिलता है। यह लिपि संसार की प्राचीन लिपियों में से एक है। अति प्राचीन लिपि होने पर भी विद्वानों ने देवनागरी लिपि को संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक ने स्वीकार किया है।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ :-

देवनागरी लिपि की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित है जो इसे वैज्ञानिक लिपि सिद्ध करती है:-

1) वर्णमाला की पूर्णता :-

देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ। ब्राह्मी लिपि में जहाँ 64 लिपि चिन्ह थे वहीं देवनागरी में केवल 52 लिपि चिन्ह है। लेकिन फिर भी लिपि चिन्हों की यह संख्या संसार की अन्य भाषाओं से अधिक है। अंग्रेजी की लिपि में 26 चिन्ह है, जर्मन भाषा की लिपि में 21 चिन्ह है। यही कारण है कि देवनागरी लिपि में हर ध्वनि को लिखा जा सकता है।

(2) क्रमबद्धता :- देवनागरी लिपि में स्वर और व्यंजनों को क्रमबद्ध रूप से लिखा गया है। पहले स्वर आते हैं, उसके पश्चात व्यंजन आते हैं। अंत में संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ, श्र आते हैं।

(3.) लिपि चिन्हों का आदर्श वर्गीकरण :- देवनागरी में वर्णों का वर्गीकरण पूर्ण-तहा वैज्ञानिक ढंग से किया गया है पहले स्वर आते हैं उसके पश्चात व्यंजन तथा अंत में संयुक्त व्यंजन। उच्चारण स्थान के आधार पर भी वर्णों का आदर्श वर्गीकरण किया गया है।

स्वर
- ह्रस्व स्वर - अ, इ, उ, ऋ
- दीर्घ स्वर - आ, ई, ऊ
- संयुक्त स्वर - ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजनों का वर्गीकरण भी वैज्ञानिक आधार पर किया गया है।

व्यंजन

कवर्ग - क, ख, ग, घ, ङ
चवर्ग - च, छ, ज, झ, ञ
टवर्ग - ट, ठ, ड, ढ, ण
तवर्ग - त, थ, द, ध, न
पवर्ग - प, फ, ब, भ, म

"क" से "म" तक 25 स्पर्श व्यंजन है।
य, र, ल, व अंतःस्थ व्यंजन है।
श, ष, स, ह ऊष्म व्यंजन है।
क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन है।
क़, ख़, ग़, ज़, फ़ आगत

SUBJECT.......................... DATE..........

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

बिलासपुर, छत्तीसगढ़

निर्देशक - डॉ. राजेश मिश्रा

प्रस्तुतकर्ता - [illegible] कुमार तंवर

आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा - II

विषय - देवनागरी लिपि : सुधार के प्रयास

अनुक्रमांक - 21004105

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

SUBJECT.....

देवनागरी लिपि : सुधार के प्रयास

देवनागरी लिपि या नागरी लिपि में कुछ विशेष गुण हैं जिनके कारण यह देश के अधिकांश भागों में प्रयोग की जाती है।

अपनी विशेषताओं के कारण ही संविधान सभा द्वारा देवनागरी लिपि में लिखित जाने वाली हिंदी को राजभाषा स्वीकार किया गया। उन्नीसवीं सदी के अंत में कलकत्ता हाईकोर्ट के जस्टिस शारदाचरण मित्र ने एक प्रस्ताव रखा था कि इन भाषाओं की एक ही लिपि 'नागरी' रहे जिससे कि इन भाषाओं में आदान प्रदान बढ़े। इसके लिए उन्होंने कलकत्ते में ही 'एकलिपि-विस्तार परिषद' की स्थापना भी की, हालांकि उनका यह प्रयास सफल न हो सका। नागरी लिपि को कुछ विशेषताओं के कारण यह संभावना हमेशा बनी रहेगी कि जैसी यूरोपीय भाषाओं में रोमन लिपि को स्वीकार कर लिया वैसे ही भारतीय भाषाओं को नागरी स्वीकार करें। हालांकि यह संभावना स्वेच्छा और लोकतांत्रिक मूल्यों पर ही आधारित होनी चाहिए। देवनागरी लिपि की विशेषताओं को हम विश्व में सर्वश्रेष्ठ विशेषताओं की लिपि कह सकते हैं।

DATE.............

सुधार के प्रयास

देवनागरी लिपि के सुधार और उसकी सीमाओं को दूर करने के लिए समय-समय पर सुझाव आते रहे हैं। लेखन और मुद्रण संबंधी जो दोष देवनागरी में विद्यमान थे, उनमें सुधार के कुछ व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास किए गए तो कुछ संस्थागत स्तर पर।

व्यक्तिगत प्रयास

मुद्रण की समस्याओं की तरफ सबसे पहला ध्यान लेखक-संपादक बालगंगाधर तिलक का गया। सन् 1904 ई. में अपने पत्र 'केसरी' के लिए उन्होंने कुछ टाइपों को मिलाकर और थोड़े हेरफेर के साथ उनमें कमी करने का प्रयास करने का प्रयास आरंभ किया। 190 1926 तक टाइपों की घटाई करते-करते टाइपों का एक फॉन्ट बनाया। जिसे 'तिलक फॉन्ट' कहते है। इसी दौरान महाराष्ट्र के ही सावरकर बंधुओं ने स्वरों के लिए 'अ' की बारहखड़ी तैयार की। जैसे - अि, अी, अु, अू, अे, अो, अौ जबकि आ, ओ, औ तो चलते ही है। वर्धा में इसे कई वर्षों तक प्रयोग किया जाता रहा। महात्मा गाँधी के 'हरिजन सेवक' में भी इस बारहखड़ी का उपयोग किया गया।

TOPIC ____ DATE ____ PAGE ____

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
कोनी, बिलासपुर
सत्रीय लेखन कार्य
सत्र - 2022 - 23
दिनांक - 08 - 05 - 2023

विषय - हिन्दी भाषा एवं भाषा विज्ञान

नाम - दिप्ती वैष्णव

कक्षा - बी. ए. द्वितीय वर्ष
(चतुर्थ सेमेस्टर)

विभाग - हिन्दी

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

मार्गदर्शक
डॉ. राजेश मिश्रा

TOPIC ____________ DATE ____ PAGE 1

- देवनागरी लिपि का परिचय
- देवनागरी लिपि के दोष
- देवनागरी लिपि में सुधार के प्रयास
- देवनागरी लिपि की विशेषता

* देवनागरी लिपि का परिचय :-

भारत की सबसे पुरानी लिपि ब्राह्मी लिपि है। इसी से देवनागरी लिपि विकसित हुई है। देवनागरी का सर्वप्रथम प्रयोग आठवीं सदी के आसपास के शिलालेखों में मिलता है। दसवीं सदी की नागरी लिपि में अ, आ, घ, म, य, ष और स के सिर दो हिस्सों में बँटे हुए मिलते है और 11वीं सदी में सिर की एक लकीर बन जाती है और हर अक्षर की चौड़ाई के बराबर हो जाता है। इस प्रकार ग्यारहवीं सदी शती के आसपास देवनागरी के जो रूप मिलते है वह वर्तमान देवनागरी रूपों से काफी समानता रखते हैं और 12वीं शताब्दी से लेकर आज तक नागरी लिपि में काफी सीमा तक एकरूपता चली आ रही है।

TOPIC _____ DATE ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐ PAGE 2☐☐

आज हिंदी भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए देवनागरी लिपि का ही प्रयोग किया जाता है और इसी को "नागरी लिपि" भी कहा जाता है। परंतु प्रश्न यह है कि इस लिपि का नाम 'देवनागरी' या नागरी कैसे पड़ा? देवनागरी के नामकरण को लेकर विद्वानों ने अलग - अलग मत व्यक्त किए हैं।

1) कुछ लोग यह मानते हैं कि इस लिपि का प्रयोग आरंभ में गुजरात के नागर ब्राह्मण ही किया करते थे, इसलिए इसे "नागरी" लिपि कहा गया। बाद में चूँकि संस्कृत भाषा को इस लिपि में लिखा गया अतः देवभाषा को जिस नागरी लिपि में लिपिबद्ध किया गया वही लिपि "देवनागरी" कहा जाने लगा क्योंकि संस्कृत का दूसरा नाम "देवभाषा" भी है। अतः देवभाषा को जिस नागरी लिपि में लिपिबद्ध किया गया वही लिपि "देवनागरी" लिपि कही गई।

2) कुछ लोगों की मान्यता है कि इस लिपि का प्रचार नगरों में अधिक था। अतः नगर की लिपि होने के कारण यह लिपि "नागरी लिपि" कही गई।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

सत्रीय लेखन कार्य

सत्र – 2022–2023

दिनाँक –10/07/23

विषय :– अधिन्यास कार्य

नाम :– इन्दु देवी

कक्षा :– बी.ए. द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेम.)

विभाग – हिन्दी

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

मार्गदर्शक
डॉ. राजेश मिश्रा

Topic _____ Date ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐ Page ☐☐☐

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर, छ.ग.

हिन्दी विभाग

असाइनमेंट कार्य ।

नाम : इन्दु देवी

क्रमांक : 2100407

कक्षा : बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

विषय : भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा ।

(देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास :-)

तिथि :

Topic ______ Date ______ Page 1

देवनागरी लिपि :=>

लिखित ध्वनि संकेतों को लिपि कहते हैं। हिन्दी भाषा जिस लिपि में लिखी जाती है उसे देवनागरी लिपि कहा जाता है।

देवनागरी लिपि का समुचित विकास 8वीं सदी में हुआ।

देवनागरी लिपि का प्रथम प्रयोग गुजरात के राजा जयभट्ट के शीलालेख में मिलता है।

विकास - उद्भव :=>

ब्राह्मी लिपि
- दक्षिणी लिपि
- उत्तरी लिपि
  - ↓ गुप्त लिपि
  - ↓ कुटिल लिपि
  - ↓ देवनागरी लिपि

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

सत्रीय लेखन कार्य

सत्र – 2022–2023

दिनाँक – 06/07/2023

विषय :– अधिन्यास कार्य

नामः– जयलक्ष्मी सिंह

कक्षा :– बी.ए. द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेम.)

विभाग – हिन्दी

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

रूपरेखा :-

(1) परिचय
(2) देवनागरी का नामकरण
(3) देवनागरी लिपि : गुण / दोष
(4) देवनागरी लिपि की विशेषताएँ
(5) देवनागरी लिपि में सुधार के प्रयास

(1) परिचय

लिपि :- मानव मन के भावों व विचारों की अभिव्यक्ति का साधन भाषा है। भाषा अपने मूल रूप में ध्वनि पर आश्रित है अर्थात् जब यह ध्वनि माध्यम से मुख से उच्चारित होती है तो यह मौखिक भाषा कहलाती है। मौखिक भाषा या उच्चारित भाषा को स्थायी रूप देने के लिए भाषा के लिखित रूप का विकास हुआ। प्रत्येक ध्वनि के लिए लिखित चिन्ह या वर्ण बनाए गए। वास्तव में लिपि ध्वनियों को लिखकर प्रस्तुत करने का ढंग है।

संक्षिप्त रूप में कहा जाए तो कथित विचारों एवं भावों को लिखकर प्रकट करने हेतु निर्धारित किए गए चिन्ह 'लिपि' कहलाते हैं।

भोलानाथ तिवारी के अनुसार - "भावों का लंकन ही लिपि है।

देवनागरी लिपि :- प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है जैसे हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि है। देवनागरी तथा अन्य भारतीय लिपियों का विकास प्राचीनतम भारतीय लिपियों से हुआ है। इस विकासक्रम को समझने के लिए ब्राह्मी लिपि के विकास क्रम को समझना आवश्यक है।

(2)

प्राचीन भारत में दो लिपियाँ व्यवहार में थी - ब्राह्मी लिपि तथा खरोष्ठी। खरोष्ठी सीमित क्षेत्र की लिपि थी जबकि ब्राह्मी समूचे भारत की लिपि थी। प्राचीन नागरी लिपि के विकसित होने से ही आधुनिक नागरी या देवनागरी लिपि का विकास हुआ। नागरी लिपि से ही राजस्थानी महाजनी, गुजराती आदि लिपियाँ विकसित हुई। प्राचीन नागरी लिपि के पश्चिमी रूप से ही देवनागरी लिपि का विकास हुआ। डॉ. कपिल देव द्विवेदी के अनुसार:- "वर्तमान देवनागरी लिपि का प्रारम्भ सन् 1000 से 1200 ई. तक माना गया है।

(2) देवनागरी का नामकरण

भारत की सबसे पुरानी लिपि ब्राह्मी लिपि है और इसी से देवनागरी लिपि विकसित हुई है। देवनागरी का सर्वप्रथम प्रयोग आठवीं शती के आस-पास के शिलालेखों में मिलता है। दसवीं सदी की नागरी लिपि में अ, आ, घ, म, य, ष और स के सिर दो हिस्सों में बंटे हुए मिलते हैं। दसवीं सदी 11वीं सदी में सिर की एक लकीर बन जाती है और हर अक्षर का सिर उस अक्षर की चौड़ाई के बराबर हो जाता है। इस प्रकार ग्यारहवीं शती के आस-पास के देवनागरी के जो रूप हैं वह वर्तमान देवनागरी रूपों से काफ़ी समानता रखते हैं और 12वीं शताब्दी से लेकर आज तक नागरी लिपि में काफ़ी सीमा तक एकरूपता चली आ रही है। आज हिन्दी भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए देवनागरी लिपि का ही प्रयोग किया जाता है और इसी को ही "नागरी लिपि" भी कहा जाता है।

Date Topic Page 0 0

नाम - कबीर शंकर

कक्षा - बी.ए चतुर्थ सेमेस्टर

रोल नं. - 21004109

विषय :- देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास
(भाषा विज्ञान एवं हिन्दी)

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

Date Topic Page 01

देवनागरि लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास : देवनागरी या नागरी लिपि में कुछ विशिष्ट गुण है। जिनके कारण यह देश के अधिकांश भागो में प्रयोग की जाति है। अपनी विशेषताओं के कारण ही संविधान सभा द्वारा देवनागरी लिपि में लिखि जाने वाली हिंदी को राजभाषा स्वीकार किया गया। उन्नीसवी सदी के मध्य में कलकता हाईकोर्ट के जस्टिस शारदाचरण मित्र ने एक प्रस्ताव रखा था। कि भारत की सभी भाषाओ की एक ही लिपि नागरि रहे जिससे की इन भाषाओ में आदान - प्रदान बढे। इसके लिए उन्होनं कलकत्ते में ही एकलिपि - विस्तार परिषद की स्थापना भी की हालाकि उनका यह प्रयास सफल न हो सका नागरि लिपि की कुछ विशेषताओं के कारण यह संभावना हमेशा बनी रहेगी कि जैसे यूरोपीय भाषाओ मे रोमन को स्वीकार कर लिया वैसी ही भारतीय भाषाओ मे रोमन लिपि को स्वीकार कर लिया वैसे ही भारतीय भाषाएँ भी नागरी को स्वीकार करें। हालाकि यह

Date ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐ Topic _____ Page 02

यह संभावना स्वेच्छा और तौकतांत्रिक मूल्यों पर ही आधारित होनी चाहिए। देवनागरी लिपि की विशेषताओं को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं।

वर्णमाला का वैज्ञानिक वर्गीकरण :- नागरी लिपि की विशेषता करें तो सबसे पहली बात जो ध्यान में यह है कि इसके ध्वनि प्रतीक संस्कृत व्याकरण के अनुसार वैज्ञानिक रूप से इस प्रकार वर्गीकृत है कि एक स्थान - विशेष से उच्चरित होने वाले अक्षर एक ही वर्ग में सम्मिलित है। मनुष्य के मुख विवर में ध्वनियों के उच्चारण में सहायक स्थानों का अगर वैज्ञानिक विवेचन किया जाए तो उसका क्रम कुछ इस प्रकार होगा कंठ - तालु > मूर्धा > दंत > ओष्ठ > नासिका देवनागरी लिपि में इनके वर्गीकरण को हम निम्नवत रूप में समझ सकते हैं।

(क) कंठ से उच्चारित ध्वनियाँ - अ, आ, क, क़, ख, ख़, ग, ग़, घ, ङ,

Topic _____ Date ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐ Page ☐☐☐

अधिष्ठास कार्य

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
(बिलासपुर छ. ग.)

नाम → मुस्कान साहू

कक्षा → बी. ए. 4था सेमेस्टर (हिंदी ऑनर्स)

विषय → भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा

रोल नं. → 2100411

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

Topic ______ Date ______ Page 01

देवनागरी लिपी की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास

देवनागरी लिपी की विशेषताएँ

लिपि चिन्हों के नाम ध्वनि के अनुसार ⇒ इस लिपी में द्योतक उसके ध्वनि के अनुसार होता है और इनका नाम भी उसी के अनुसार होता है जैसे- अ, आ, ओ, औ, क, ख आदि। किंतु रोमन लिपि चिन्ह नाम में आई किसी भी ध्वनि का कार्य करती है, जैसे अ (अ) ब (क) ल (य) आदि। इसका एक कारण यह हो सकता है कि कि रोमन लिपि वर्णात्मक है और देवनागरी ध्वन्यात्मक।

लिपि चिन्हों की अधिकता ⇒ विश्व के किसी भी लिपी में इतने लिपि प्रतीक नहीं हैं अंग्रेजी में ध्वनियाँ ५० के ऊपर है किंतु केवल 26 लिपी चिन्हों से काम होता है।

देवनागरी या नागरी लिपी में कुछ विशिष्ट गुण है जिनके कारण यह देश के अधिकांश भागों में प्रयोग की जाती है। अपनी विशेषताओं के कारण ही संविधान सभा द्वारा देवनागरी लिपी में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा स्वीकार किया

Topic ________ Date ____ Page 02

गया। 19वीं सदी के मध्य में कलकत्ता हाईकोर्ट के जस्टिस शारदाचरण मित्र ने एक प्रस्ताव रखा था कि भारत की सभी भाषाओं की एक ही लिपि 'नागरी' रहे जिससे कि इन भाषाओं में आदान-प्रदान बढ़े। इसके लिए उन्होंने कलकत्ते में में ही 'एकलिपि-विस्तार परिषद' की स्थापना भी की, हालांकि उनका यह प्रयास सफल न हो सका। नागरी की कुछ विशेषताएं के कारण यह संभावना हमेशा बनी रहेगी कि जैसे यूरोपीय भाषाओं में रोमन लिपि को स्वीकार कर लिया वैसे ही भारतीय भाषाएं भी नागरी को स्वीकार करें। हालांकि यह संभावना स्वेच्छा और लोकतांत्रिक मूल्यों पर ही आधारित होनी चाहिए। देवनागरी लिपि की विशेषताओं को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं।

वर्णमाला का वैज्ञानिक वर्गीकरण ⇒ नागरी लिपी की विशेषता की बात करें तो सबसे पहली बात जो ध्यान में आती है वह यह है कि सबसे इसके ध्वनिप्रतीक संस्कृत व्याकरण के अनुसार वैज्ञानिक रूप से इस प्रकार वर्गीकृत है कि एक स्थान-विशेष से उच्चरित होने वाले अक्षर एक ही वर्ग में सम्मिलित हों। मनुष्य के मुख-विवर में

गुरु घासीदास विश्व विद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.)

नाम - प्रज्ञा चन्द्रा
कक्षा - बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर
विषय - अभिन्यास कार्य
रोल नं. - 2100$112
विभाग - हिन्दी

दिनांक
06/7/23

मार्गदर्शक
डॉ. राजेश मिश्रा

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

"देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास"

- प्रस्तावना
- देवनागरी लिपि का नामकरण
- देवनागरी लिपि की विशेषताएँ
- देवनागरी लिपि के दोष
- देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयास
- भारतीय संविधान में देवनागरी लिपि की स्थिति
- निष्कर्ष

(1) प्रस्तावना :- लिपि का उद्भव और विकास भाषा को स्थायित्व प्रदान करने के लिए हुआ। लिपि का सबसे बड़ा उपयोग तो यही है कि हम भाषा के उच्चारित रूप को लिपिबद्ध करके स्थाई बना सकते है। हम हिंदी, संस्कृत तथा मराठी भाषाओं से परिचित ही है। ये तीनों भाषाएँ देवनागरी लिपि के लिखी जाती है। देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। देवनागरी लिपि का नाम देवनागरी कैसे पड़ा इस पर भी विद्वानों में मतभेद है। देवनागरी लिपि अक्षर आधारित लिपि है इसीलिए इसे संश्लेषणात्मक लिपि कहा जाता है। देवनागरी लिपि का यह गुण इसे संसार की अन्य भाषाओं की लिपियों से अधिक वैज्ञानिक बना देता है।

देवनागरी लिपि हिन्दी भाषा की एक लिपि है। इसका अर्थ देवताओं की भाषा या "देवताओं की लिपि" है। इसे अधिकांशतः हिन्दू धर्म में प्रयोग किया जाता है, जहाँ इसे धार्मिक ग्रंथों के लिए लेखबद्ध किया जाता है।

② **देवनागरी लिपि का नामकरण :-** भारत की सबसे पुरानी लिपि है। देवनागरी का सबसे प्रथम प्रयोग 8वीं शती के आसपास के शिलालेखों में मिलता है। दसवीं सदी की नागरी लिपि में अ, आ, घ, म, य, ष और स के सिर दो हिस्सों में बँटे हुए मिलते हैं और 11वीं सदी में की एक लकीर बन जाती है और हर अक्षर की चौड़ाई के बराबर हो जाता है। आज हिंदी भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए देवनागरी लिपि का ही प्रयोग किया जाता है और इसे नागरी लिपि भी कहा जाता है।

देवनागरी लिपि के नामकरण को लेकर विद्वानों ने अलग-अलग मत व्यक्त किए हैं :-

(1) कुछ लोगों की मान्यता है कि इस लिपि का प्रचार नगरों में अधिक था। अतः नगर की लिपि होने के कारण यह लिपि "नागरी लिपि" कही गई।

(2.) कुछ विद्वान यह मानते हैं कि इस लिपि का काशी में बहुत प्रचलन था। काशी को भगवान शिव की नगरी या देवनगर कहा जाता था। देवनगर में प्रचलित लिपि का नाम ही देवनागरी पड़ा।

(3.) कुछ लोगों की मान्यता है कि चंद्रगुप्त द्वितीय की राजधानी पाटलिपुत्र को ही "नगर" कहा जाता था और स्वयं चंद्रगुप्त को लोग "देव" कहते थे। इन दोनों के संयोग से ही देवनागरी नाम विकसित हुआ है।

(4) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा की मान्यता है कि मध्ययुग में स्थापत्य कला की अनेक शैलियों में से एक शैली का नाम "नागर" शैली था। इस शैली के अंतर्गत चौकोर आकृतियाँ बनाई जाती थीं। इधर नागरी लिपि के अक्षरों में भी चौकोर आकृतियाँ होती थीं। समानता के आधार पर [illegible] लिपि का नाम "नागरी" पड़ गया।

ये सभी मत अनुमान के आधार पर दिए गए हैं। परन्तु जो भी हो, हमारी आज की हिंदी-संस्कृत की लिपि का नाम देवनागरी पड़ ही गया और संस्कृत को देवभाषा भी कहा जाता है।

Page No.

Roll No.

Date

मूल्यांकन

सेमेस्टर

परीक्षा

चतुर्थ

2023

नाम प्रीति पटेल

विभाग हिन्दी

विषय आधन्यास कार्य

सेमेस्टर चतुर्थ सेमेस्टर

विषय कार्य देवनागरी लिपि की विशेषताएं और सुधार प्रयास

रोल नं. 2100 4114

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय कोनी बिलासपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक

राजेश मिश्रा सर

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

Page No. 1

Roll No. Date

1) देवनागरी लिपि की विशेषताएँ और सुधार प्रयास

हिन्दी व संस्कृत की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण लिपि है संविधान में इसे राज लिपि का पद प्राप्त है। हिंदी व संस्कृत का संपूर्ण साहित्य इसी लिपि में मिलता है, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं का साहित्य भी इसी लिपि में मिलता है यह लिपि संसार की प्राचीन लिपियों में से एक है और प्राचीन लिपि होने पर भी विद्वानों ने देवनागरी लिपि को संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक ने स्वीकार किया है।

देवनागरी लिपि की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित है :-

1.) वर्णमाला की पूर्णता :- देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ ब्राह्मी लिपि में जहां 64 लिपि चिन्ह थे वहीं देवनागरी में केवल 52 लिपि चिन्ह है लेकिन फिर भी लिपि चिन्हों की यह संख्या संसार की अन्य भाषाओं से अधिक है अंग्रेजी की लिपि में 26 चिह्न हैं जर्मन भाषा की लिपि में 27 चिह्न है यही कारण है की देवनागरी लिपि में हर ध्वनि को लिखा जा सकता है।

Page No. 2

Roll No.

Date

2.) क्रमबद्धता :- देवनागरी लिपि में स्वर और व्यंजनों को क्रमबद्ध रूप से लिखा गया है पहले स्वर आते है उसके पश्चात व्यंजन आते हैं। अंत में संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ, श्र आते हैं

3. लिपि चिन्हों का आदर्श वर्गीकरण :-

देवनागरी में वर्णों का वर्गीकरण पूर्ण तथा वैज्ञानिक ढंग से किया गया है पहले स्वर आते है उसके पश्चात व्यंजन तथा अंत में संयुक्त व्यंजन। उच्चारण स्थान के आधार पर भी वर्णों का आदर्श वर्गीकरण किया गया है।

स्वर :- • ह्रस्व स्वर - अ, इ, उ, ऋ
• दीर्घ स्वर - आ, ई, ऊ
• संयुक्त स्वर - ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजन :- कवर्ग - क, ख, ग, घ, ङ
चवर्ग - च, छ, ज, झ, ञ
टवर्ग - ट, ठ, ड, ढ, ण
तवर्ग - त, थ, द, ध, न
पवर्ग - प, फ, ब, भ, म
क से म तक २५ स्पर्श व्यंजन हैं
य, र, ल, व अंत स्थ व्यंजन हैं
श, ष, स, ह ऊष्म व्यंजन हैं।

SUBJECT.............................. DATE..............................

(1)

नाम ⇒ प्रिंस वानी

कक्षा ⇒ बी. ए. चतुर्थ सेमेस्टर

विषय ⇒ अधिन्यास कार्य

विभाग ⇒ हिन्दी

रोल नं. ⇒ 21004115

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

SUBJECT..... DATE.....

(2)

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास

देवनागरी का नामकरण

भारत की सबसे पुरानी लिपि ब्राह्मी लिपि है। इसी से देवनागरी लिपि विकसित हुई है। देवनागरी का सर्वप्रथम प्रयोग आठवीं शती के आस पास के शिलालेखों में मिलता है। दसवीं सदी की नागरी लिपि में अ, आ, घ, म, य, ष और स् के सिर दो हिस्सों में बँटे हुए मिलते हैं और 11वीं सदी में सिर की एक लकीर बन जाती है और हर अक्षर की चौड़ाई के बराबर हो जाता है इस तरह ग्यारहवीं शती के आसपास देवनागरी के जो रूप हमें मिलते हैं वह वर्तमान देवनागरी रूपों से काफी समानता रखते हैं और 12वीं शताब्दी से लेकर आज तक नागरी लिपि में काफी सीमा तक एकरूपता चली आ रही है प्रयोग किया आज हिंदी भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए देवनागरी लिपि का ही प्रयोग किया जाता है और इसी को "नागरी लिपि" भी कहा जाता है। परंतु प्रश्न यह है कि इस लिपि का नाम "देवनागरी" या नागरी कैसे पड़ा? देवनागरी के नामकरण को लेकर विद्वानों ने अलग-अलग मत व्यक्त किए हैं। यहाँ हम उनकी चर्चा एक-एक करके करेंगे-

SUBJECT..... DATE.....

(3)

1. कुछ लोग यह मानते हैं कि इस लिपि का प्रयोग आरंभ में गुजरात के नागर ब्राह्मण ही किया करते थे, इसलिए इसे "नागरी" लिपि कहा गया। 8वीं में चूँकि संस्कृत भाषा को इसी लिपि में लिखा गया अतः इसे "देवनागरी" कहा जाने लगा क्योंकि संस्कृत का दूसरा नाम "देवभाषा" भी है अतः देवभाषा को जिस नागरी लिपि में लिपिबद्ध किया गया वही लिपि "देवनागरी" लिपि कही गई।

2. ललित विस्तार नामक बौद्ध ग्रंथ में कुछ लिपियों का उल्लेख मिलता है। इनमें एक लिपि "नाग" लिपि से विकसित हुई है। परंतु डॉ. बार्नेट ने इस मत का अस्वीकार करते हुए कहा कि "नाग" और "नागरी" लिपियाँ दो अलग-अलग लिपियाँ हैं, ये एक नहीं हो सकतीं।

3. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा की मान्यता है कि मध्ययुग में स्थापत्य कला की अनेक शैलियों में से एक शैली का नाम 'नागर' शैली था। इस शैली के अंतर्गत चौकोर आकृतियाँ बनाई जाती थीं। इधर नागरी लिपि के अक्षरों में भी चौकोर आकृतियाँ होती थीं। इसी समानता के आधार पर इस लिपि का नाम "नागरी" पड़ गया।

ऊपर बताए गए इन विभिन्न मतों में से किसे माना जाए और किसे न माना जाए, यह कहना कठिन है क्योंकि ये सभी मत अनुमान के आधार पर दिए गए हैं। इनके पीछे कोई स्पष्ट प्रमाण तो मिलता नहीं है परंतु जो भी हो, हमारी आज की हिंदी-संस्कृत की लिपि का नाम नागरी या देवनागरी पड़ ही गया है और संस्कृत को तो देव भाषा कहा ही जाता था।

अधिन्यास कार्य

गुरू घासीदास विश्व विद्यालय बिलासपुर
छ० ग०

नाम — प्रियंका

कक्षा — B.A. 4th सेमेस्टर

विभाग — हिंदी

रो० न० — 21004116

विषय — भाषा विज्ञान (देवनागरी लिपि की विशेषताएँ और सुधार के प्रयास)।

दिनांक
10/07/023

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

(1) यह लिपि भाषा के अंतर्गत आने वाले अधिक से अधिक चिन्हों से संपन्न है जिसमें परम्परागत रूप से 11 स्वर और 33 व्यंजन है। इसके अतिरिक्त ड़, ढ़, क, ख, ग, ज, फ, इन ध्वनियों के लिए भी चिन्ह बने है। क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, संयुक्त व्यंजनों के लिए अलग चिंन्ह है।

(2) यह लिपि समस्त प्राचीन भारतीय भाषाओं जैसे - संस्कृत, प्राकृत, पाली एवं अपभ्रंश की भी लिपि रही है।

(3) जो लिपि चिन्ह जिस ध्वनि का द्योतक है उसका नाम भी वही है जैसे - आ, इ, क, ख, आदि। इस दृष्टि से रोमन लिपि में पर्याप्त भ्रम की स्थिति विद्यमान है। जैसे C, H, J, W, आदि।

(4) देवनागरी लिपि में रोमन के समान कैपिटल लेटर और स्मॉल लेटर का झंझट नहीं है। वास्तव में आदर्श लिपि वही है जिसमें एकरूपता हो।

(5) देवनागरी लिपि में सभी नासिक्य ध्वनियों के लिए अलग - अलग चिह्न है। जैसे - रोमन में - ङ, ञ, ण, सभी को N से लिखा जाता है। भारतीय भाषाओं के तुल्या, विष्णु और प्राणायाम जैसे शब्दों को रोमन में लिख पाना असंभव है।

(6) उत्तर भारत की सभी लिपियाँ नागरी के ही रूप भेद है, यह संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश हिंदी, मराठी, नेपाली आदि अनेक भाषाओं की लिपि तो है, ही साथ ही अन्य भाषा की लिपि होने का सामर्थ्य भी इसमें विद्यमान है।

(7) देवनागरी लिपि की एक अन्य विशेषता यह है कि यह उत्तरी भारत में हिमालय से लेकर महाराष्ट्र और हरियाणा से लेकर बिहार और झारखंड तक फैली हुई है।

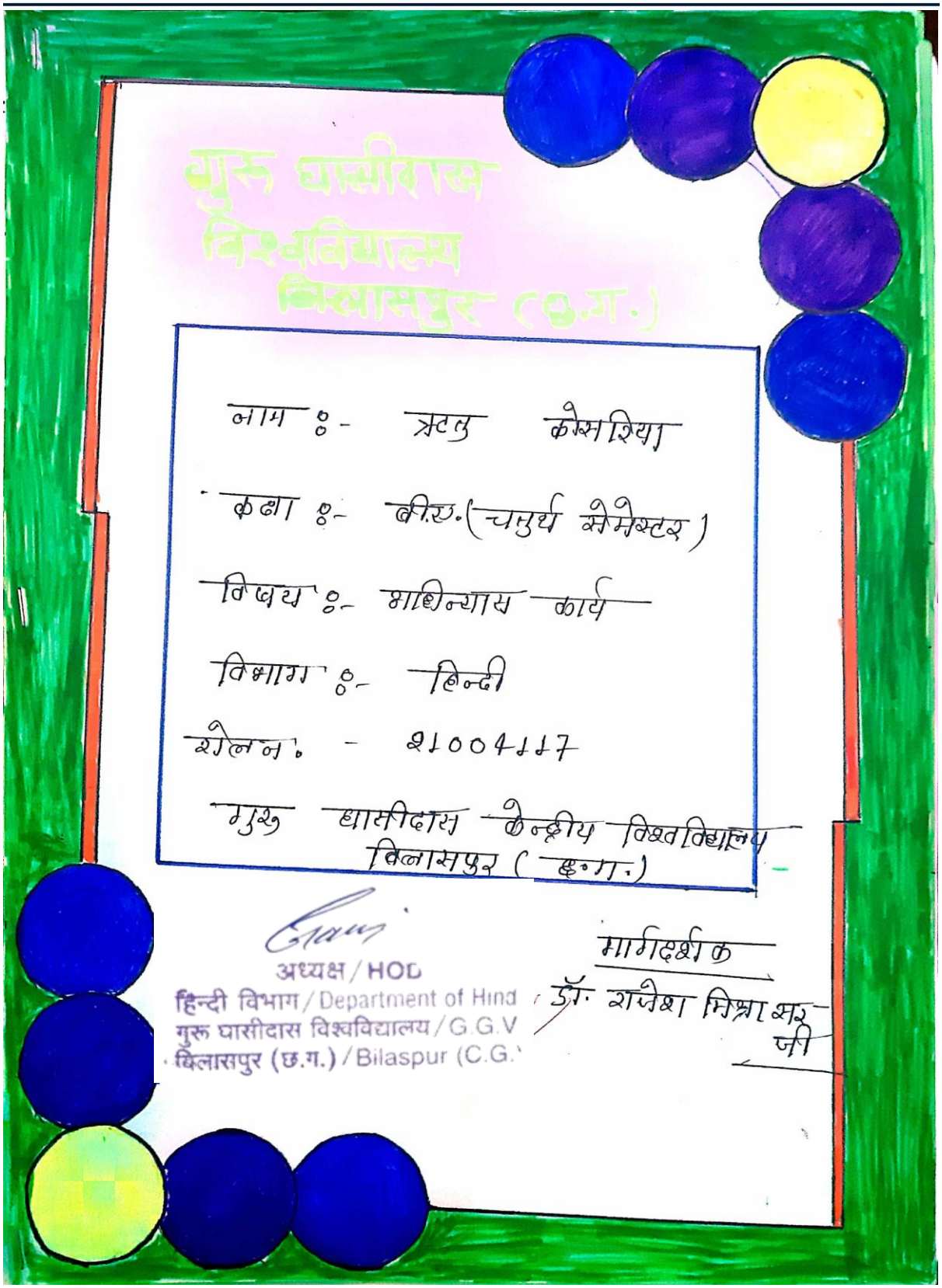

गुरु घासीदास
विश्वविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.)

नाम :- ऋतु कौसरिया

कक्षा :- बी.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर)

विषय :- अभिन्यास कार्य

विभाग :- हिन्दी

रोल नं. - 21004117

गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

मार्गदर्शक
डॉ. रजेश मिश्रा सर
जी

देवनागरी लिपि

रूपरेखा :-

(1) परिचय (देवनागरी लिपि का)
(3) देवनागरी लिपि :- गुण / दोष
(4) देवनागरी लिपि की विशेषताएँ
(5) देवनागरी लिपि में सुधार के प्रयास
(2) देवनागरी लिपि का नामकरण

1) देवनागरी लिपि का परिचय :-

देवनागरी एक ऐसी लिपि है जिसमें अनेक भारतीय भाषाएँ तथा कुछ विदेशी भाषायें लिखी जाती है । संस्कृत, पालि, हिन्दी, मराठी, कोंकणी, सिंधी, कश्मीरी, नेपाली, तामाङ भाषा, गढ़वाली, बोडो, अंगिका, मगही, भोजपुरी, मैथिली, संथाली आदि भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाती है । इसके अतिरिक्त कुछ स्थितियों में गुजराती, पंजाबी, बिष्णुपुरिया मणिपुरी, रोमानी और उर्दू भाषाएँ भी देवनागरी में लिखी जाती है । देवनागरी लिपि कहलाती है ।

अधिकतर भाषाओं की तरह देवनागरी भी बायें से दायें लिखी जाती है । प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है (कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं होती है) इसे शिरोरेखा कहते हैं । इसका विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है । यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो प्रचलित लिपियों में (रोमन, अरबी, चीनी आदि में

5) कुछ विद्वान यह मानते हैं कि इस लिपि का काशी में बहुत प्रचलन था। काशी को भगवान शिव की नगरी या देवनगर कहा जाता था। देवनगर में प्रचलित लिपि का नाम ही देवनागरी पड़ा।

6) कुछ लोगों की मान्यता है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय की राजधानी पाटलिपुत्र को ही "नगर" कहा जाता था, और स्वयं चन्द्रगुप्त को लोग "देव" कहते थे। इन दोनों के संयोग से ही देवनागरी नाम विकसित हुआ है।

ऊपर बताये गये इन विभिन्न मतों में से किसे माना जाये, किसे न माना जाये, यह कहना कठिन है। कारण यह है कि ये सभी मत अनुमान के आधार पर दिये गये हैं। इनके पीछे कोई स्पष्ट प्रमाण तो मिलता नहीं है परन्तु जो भी हो, हमारी आज की हिन्दी संस्कृत की लिपि का नाम नागरी या देवनागरी पड़ ही गया और वह आज तक चला आ रहा है। संस्कृत भाषा का समस्त लेखन कार्य देवनागरी में ही हुआ है और संस्कृत को तो देवभाषा कहा ही जाता था। अतः यह बड़ा स्वाभाविक लगता है कि देवभाषा को जिस लिपि में लिपिबद्ध किया गया उसी लिपि का नाम देवनागरी पड़ गया।

3) देवनागरी लिपि के गुण / दोष :-

गुण :-

देवनागरी लीपि में अनेक ऐसे गुण उपलब्ध होते हैं जो इसका स्थान संसार की लिपियों में अधिक महत्वपूर्ण बनाये हुए हैं जो निम्न हैं।—

1) देवनागरी लीपि में जैसे उच्चारण किया जाता है वैसे ही लिखा जाता है।

SUBJECT........ DATE........

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर

- हिंदी विभाग -

नाम : साक्षी यादव

स्नातक : 4th

विषय : वाक्य संरचना

विभाग : हिन्दी विभाग

रोल नं : 21004118

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

SUBJECT........ DATE........

भाषा मे संरचना मे वाक्य :-

भाषा की संरचना के तीन प्रमुख अंग माने जाते है - ध्वनि, व्याकरण और अर्थ। इनमे से व्याकरण के दो प्रमुख अवयवों मे एक है वाक्य और दूसरा शब्द। सुविधा के लिए भाषा संरचना को वर्गीकरण इस प्रकार दर्शाया जा सकता है।

व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से वाक्य भाषा की सबसे बड़ी इकाई है, लेकिन संदेश - संप्रेषण की दृष्टि से वाक्य से भी बड़ी एक इकाई है, क्योंकि जो वक्ता के पूर्ण मंतव्य का प्रतिनिधित्व करती है। क्योंकि भाषा की वह इकाई है जो वक्ता के अभीष्ट संदेश को अपनी पूर्णता मे लक्ष्य या श्रोता तक पहुंचाती है।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 क्र. 25 के अंतर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कोनी, बिलासपुर - 495009 (छ.ग.)

Guru Ghasidas Vishwavidyalaya
(A Central University Established by the Central Universities Act 2009 No. 25 of 2009)
Koni, Bilaspur – 495009 (C.G.)

SUBJECT........................ DATE........................

वाक्य संरचना के स्तर :-

(क) उपवाक्य : वाक्य से छोटा घटक उपवाक्य है। वाक्य एक उपवाक्य का भी हो सकता है और एक से अधिक उपवाक्यों का भी।

जहाँ वाक्य में केवल एक उपवाक्य होता है वहाँ वह स्वतंत्र उपवाक्य होता है और सरल वाक्य कहलाता है।

इस स्थिति में वाक्य और उपवाक्य में अभेद होता है। उदाहरण के लिए नीचे दिया वाक्य

1. एक स्वतंत्र उपवाक्य है और साथ ही सरल वाक्य भी है। इसमें केवल एक ही उपवाक्य की सत्ता है।

(ख) पदबंध :-

उपवाक्य से छोटा पदबंध है। उपवाक्य पदबंधों से मिलकर बनता है। पदबंध वाक्य से निर्धारित व्याकरणिक प्रकार्यों को पूरी करने वाली इकाइयाँ हैं जिनका अस्तित्व केवल वाक्य के अंतर्गत ही संभव है।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

नाम => शशिकांत

विषय => अधिन्यास कार्य

विभाग => हिन्दी चतुर्थ सेमेस्टर

रोल न => 21004119

मार्गदर्शक

राजेश मिश्रा सर जी

दिनांक

10/07/23

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

ध्वनिम और लेखिम की एकरूपता

→ नागरी की दूसरी विशेषता है बोलने और लिखने में अधिक से अधिक समानता का होना। हालांकि बोलने और और लिखने में पूरी एकरूपता कठिन है किंतु देवनागरी में अपेक्षाकृत यह साम्य अधिक दिखाई पड़ता है। उदाहरण के लिए रोमन लिपि में 'उ' की ध्वनि का बोध 'u' से भी होता है (put) और द्वित्व ओ (oo) से भी (Foot) इसके अलावा 'इ' के लिए कहीं रोमन में 'e' (be, degree) का प्रयोग होता है तो कहीं 'I' (Ring, This) इसके साथ देखा जाए तो एक ही अक्षर कई ध्वनियों का सूचक है। देखा जाए तो जैसे - u 'अ' (but) की ध्वनि भी देता है और 'उ' (put) की भी। देवनागरी लिपि में ऐसी अवैज्ञानिकता नहीं है।

लिपि-चिन्हों के नाम ध्वनि के अनुरूप

↓ नागरी की एक विशेषता यह भी है कि लिपि-चिन्हों के नाम उनकी ध्वनियों के अनुरूप है। जैसे - अ, ओ, क, च, ल आदि। रोमन में यह समस्या है कि इसमें लिपि-चिन्हों के नाम उनकी प्रधान ध्वनि का नाम करता है।

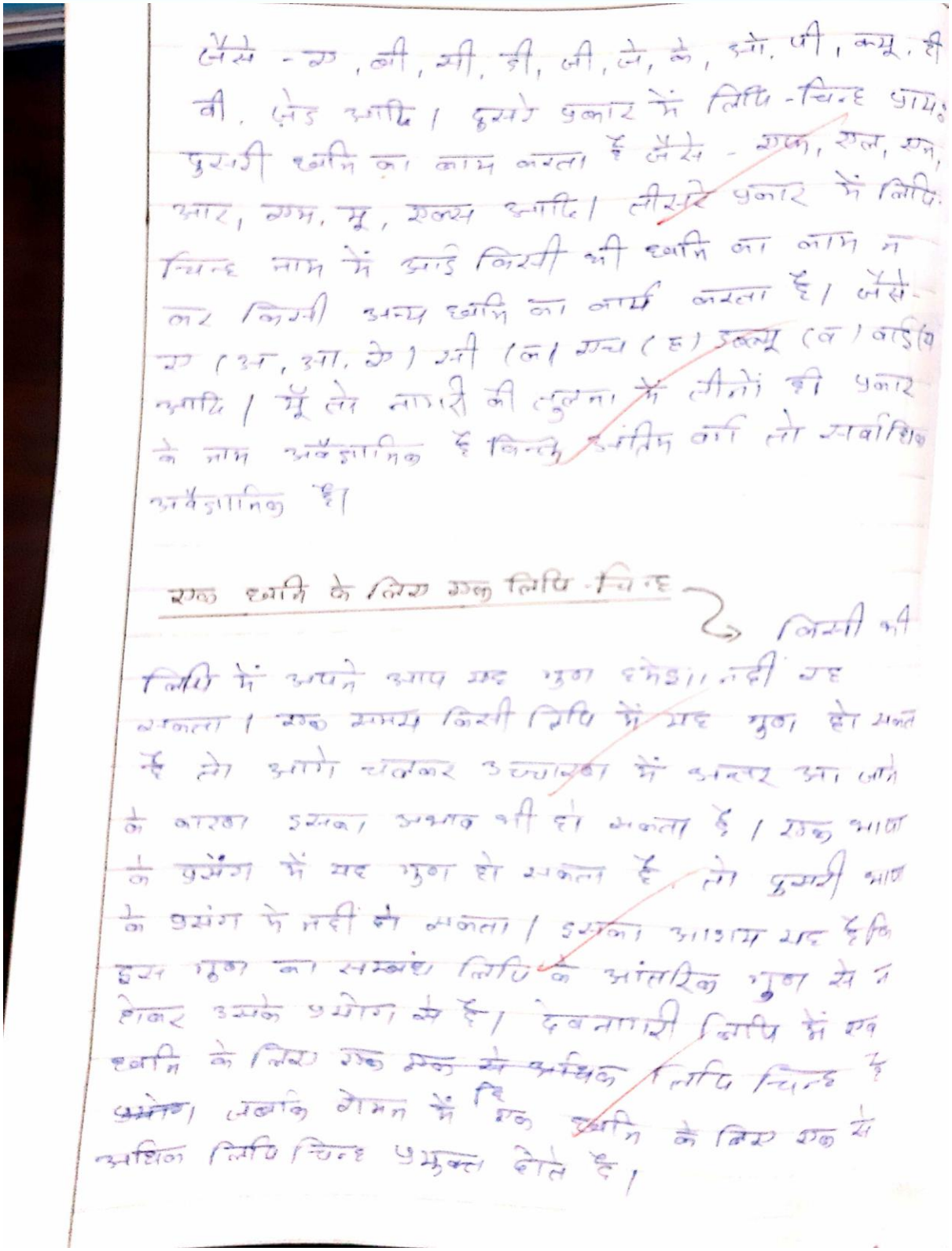

जैसे - ए, बी, सी, डी, जी, जे, के, ओ, पी, क्यू, टी, वी, ज़ेड आदि। दूसरे प्रकार में लिपि-चिन्ह प्रायः दूसरी ध्वनि का काम करता है जैसे - एफ, एल, एन, आर, एम, यू, एक्स आदि। तीसरे प्रकार में लिपि-चिन्ह नाम में आई किसी भी ध्वनि का काम न कर किसी अन्य ध्वनि का कार्य करता है। जैसे- ए (अ, आ, ऐ) सी (क) एच (ह) डब्ल्यू (व) वाई (य) आदि। यूँ तो नागरी की तुलना में तीनों ही प्रकार के नाम अवैज्ञानिक है किन्तु अंतिम वर्ग तो सर्वाधिक अवैज्ञानिक है।

एक ध्वनि के लिए एक लिपि-चिन्ह → किसी भी लिपि में अपने आप यह गुण पैदा नहीं हो सकता। एक समय किसी लिपि में यह गुण हो सकता है तो आगे चलकर उच्चारण में अन्तर आ जाने के कारण इसका अभाव भी हो सकता है। एक भाषा के प्रसंग में यह गुण हो सकता है तो दूसरी भाषा के प्रसंग में नहीं हो सकता। इसका आशय यह है कि इस गुण का सम्बंध लिपि के आंतरिक गुण से न होकर उसके प्रयोग से है। देवनागरी लिपि में एक ध्वनि के लिए एक ~~एक से अधिक~~ लिपि चिन्ह है ~~अनेक~~, जबकि रोमन में किसी एक ध्वनि के लिए एक से अधिक लिपि चिन्ह प्रयुक्त होते है।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

सत्रीय लेखन कार्य

सत्र – 2022–2023

दिनाँक –

विषय :– अधिन्यास कार्य

नाम :– शुभम प्रजापति

कक्षा :– बी.ए. द्वितीय वर्ष (च

विभाग :– हिन्दी

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

मार्गदर्शक
राजेश मिश्रा सर

Page No. 1

Roll No.

Date

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास

परिचय

अधिकतर भाषाओं की तरह देवनागरी भी बाएँ से दाएँ लिखी जाती है। प्रत्येक अक्षर के ऊपर एक रेखा खिंची होती है जिसे शिरोरेखा कहते हैं। देवनागरी का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है। जो प्रचलित लिपियों रोमन अरबी, चीनी, आदि में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे पाठ को लगभग हू-ब-हू उच्चारण किया जा सकता है जो कि रोमन लिपि और अन्य कई लिपियों में संभव नहीं हैं जब तक कि उनका विशेष मानकीकरण न किया जाए जैसे – आइट्रांस या IAST।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

देवनागरी लिपि अनेक विशेषताओं की स्वामिनी है। और वास्तव में यह विश्व की समस्त वर्तमान लिपियों से श्रेष्ठ और वैज्ञानिक है। देवनागरी लिपि में एक आदर्श लिपि होने की सभी गुण विद्यमान हैं। यह लिपि अक्षरात्मक है। भारत की अनेक भाषाओं के लिए

Page No. 2

Roll No.

Date

देवनागरी लिपि का प्रयोग लम्बे समय से होता आ रहा है।

विनोबा भावे ने अपने एक भाषण में कहा था यदि हम सारे देश के लिए देवनागरी लिपि को अपना ले तो हमारा देश मजबूत हो जायगा। फिर तो देवनागरी लिपि ऐसा एक कवच सिद्ध हो सकती है जैसे कोई भी नहीं। यह लिपि हर संदर्भ एवं स्थिति में उपयुक्त है और इतनी वैज्ञानिक है कि हर दोनों में आसानी से ढल सकती है। देवनागरी लिपि की विभिन्न विशेषताएँ निम्नलिखित है।

(1) यह लिपि भाषा के अंतर्गत आने वाले अधिक से अधिक चिन्हों से संपन्न है। जिसमें परंपरागत रूप से 11 स्वर 33 व्यंजन है। इसके अतिरिक्त ड़, ढ़, क़, ख़, ग़, ज़, फ़ इन ध्वनियों के लिए भी चिन्ह बने हैं। क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजनों के लिए बनाए है।

(2) यह लिपि समस्त प्राचीन भारतीय भाषाओं जैसे – संस्कृत, प्राकृत, पाली एवं अपभ्रंश की भी लिपि रही है।

(3) जो लिपि चिन्ह जिस ध्वनि का द्योतक है उसका नाम वही है जैसे – आ, इ, क, ख आदि। इस दृष्टि से रोमन लिपि में

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 क्र. 25 के अंतर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कोनी, बिलासपुर - 495009 (छ.ग.)

Guru Ghasidas Vishwavidyalaya
(A Central University Established by the Central Universities Act 2009 No. 25 of 2009)
Koni, Bilaspur – 495009 (C.G.)

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर(छ.ग.)

सत्र 2021

परियोजना कार्य

हिन्दी विभाग

देवनागरी लिपि

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

नाम- सौम्या ताम्रकार
अनुक्रमांक न.
21004121

बी. ए. हिन्दी (ऑनर्स)
4th सेमेस्टर

Topic देवनागरी लिपि Date Page 01

* देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास

→ देवनागरी लिपि की विशेषताएँ :-

i) देवनागरी लिपि एक आदर्श और वैज्ञानिक लिपि है। देवनागरी की वैज्ञानिकता के संदर्भ में 28.3 में बताई गई समस्त विशेषताओं को लिया जा सकता है।

ii) देवनागरी भारत की प्राचीनतम लिपि है और इसका विकास भारत में ही हुआ है। गुजराती, पंजाबी, उर्दू आदि कई भाषाओं का प्राचीन साहित्य देवनागरी में मिलता है। संस्कृत भाषा का लेखन तो देवनागरी में होता ही था। हिंदी और हिंदी की विभिन्न बोलियों का लेखन कार्य देवनागरी में होता है। मराठी भाषा भी देवनागरी में ही लिखी जाती है। इस दृष्टि से हमारे देश की यह एक मुख्य लिपि है।

iii) भारतीय संविधान में राजभाषा हिंदी के साथ-साथ देवनागरी को ही राजलिपि के रूप में स्वीकार किया गया है।

iv) देवनागरी लिपि अक्षर (Syllable) आधारित लिपि है। इकाई 4 में आपको 'अक्षर' के विषय में बताया गया था कि एक 'हृत्स्पंद' में उच्चरित होने वाली समस्त ध्वनियों के समूह को अक्षर कहते हैं तथा इसमें एक स्वर अवश्य होता है। इस दृष्टि से व्यंजनों का उच्चारण जब हम अलग से करते हैं तो इसमें 'अ' स्वर मिले रहने के कारण वह एक अक्षर के रूप में ही

ACE

Topic........ Date........ Page ०२

उच्चारित किया जाता है। केवल देवनागरी मे ही यह व्यवस्था है कि यहाँ संपूर्ण अक्षर को व्यक्त करने वाले वर्ण चिहन बनाए गए हैं जैसे -

प् + अ - प
स् + अ - स
न् + अ - न
र् + अ - र आदि।

v) देवनागरी लिपि में ही यह व्यवस्था है कि जब किसी व्यंजन को स्वर रहित करके दिखाना हो तो उसके नीचे हलन्त का चिहन लगा दिया जाता है तथा जब दो व्यंजनों को संयुक्त रूप में लिखना हो तो :

(i) खड़ी पाई वाले व्यंजनों में खड़ी पाई हटा दी जाती है जैसे :-

घ्‌ ट्‌ च्‌ ज्‌ ण्‌ त्‌ ष्‌ ल्‌ श्‌ स्‌ आदि।

(ii) कुछ व्यंजन जैसे क, फ मे पूर्वार्ध अंश रखा जाता है जैसे - क्, फ्

(iii) 'र' व्यंजन में :

(क) 'र + व्यंजन' की स्थिति में "र" बाद में आने वाले व्यंजन के ऊपर आ जाता है जैसे 'र्'

(ख) 'व्यंजन + र' की स्थिति में यह नीचे लग जाता है जैसे - क्र, द्र, भ्र आदि।

(ग) 'ट, ड + र' के संयोग में यह इस रूप में आ जाता है - ट्र, ड्र आदि।

(vi) देवनागरी लिपि ही एक ऐसी लिपि है जिसमें विदेशी भाषाओं से आगत व्यंजन ध्वनियों के

ACE

Page No.

Roll No.

Date

नाम = सुमित ध्रुव

B. A = IV हिंदी

विषय = हिंदी भाषा।

अधिन्यास कार्य

अनुक्रमांक - 21004122

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

Page No.

Roll No.

Date

देवनागरी लिपि अनेक बिशेषताओ की स्वमिनी है और वास्तव मे यह विश्व की समस्त वर्तमान लिपियो से श्रेष्ठ और वैज्ञानिक है। देवनागरी लिपि मे एक आदर्श लिपि होने के सभी गुण विद्यमान है। यह लिपि अक्षरात्मक है। भारत की अनेक भाषाओ के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग लंबे समय से होता आ रहा है।

विनोबा भावे ने अपने एक भाषण मे कहा था, यदि हम सारे देश के लिए देवनागरी लिपि को अपना ले तो "हमारा देश बहुत मजबूत हो जाएगा।" फिर तो देवनागरी लिपि ऐसी रक्षा कवच सिद्ध हो सकती है जैसे कोई भी नहीं। यह लिपि हर सदभी स्व स्थिति मे उपयुक्त है, और इतनी लचीली है कि हर ढाँचे मे आसानी से ढल सकती है। देवनागरी लिपि की विभिन्न विशेषताएँ निम्नलिखित है:

१ यह लिपि भाषा के अंतर्गत आने वाले अधिक से चिह्नो से संपन्न है। जिसमे परंपरागत रूप से ११ स्वर और ३३ व्यंजन है। इसके अतिरिक्त ड़, ढ़, क़ ख़, ग़, ज़, फ़, इन ध्वनियो के लिए अलग

Page No.

Date

Roll No.

चिह्न बने हैं। क्ष, त्र, ज्ञ, का संयुक्त व्यंजनो के लिए अलग चिह्न है।

२ यह लिपि समस्त प्राचीन स्तरीय भारतीय भाषाओं जैसे संस्कृत, प्राकृत पाली एवं उपभ्रंश की भी लिपि रही है।

३ जो लिपि चिह्न जिस ध्वनि का द्योतक है उसका नाम भी वही है जैसे- आ, इ, क, ख आदि। इस दृष्टि से रोमन लिपि मे पर्याप्त भ्रम की स्थिति विद्यमान है जैसे- C, H, G, W आदि।

४ हिन्दी मे ऋ - रि, श - ष, को छोड़कर शेष सभी ध्वनियों के लिए स्वतंत्र लिपि

५ नागरी लिपी मे उच्चारण की दृष्टि से समान लिपि चिह्नों मे आकृति मे भी समानता देखने को मिलती है। रोमन लिपि मे यह गुण ना के बराबर है - P, Y, q, a, b आदि।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

सत्रीय लेखन कार्य

सत्र – 2022–2023

दिनाँक – 10-07-23

विषय :– अधिन्यास कार्य

नाम :– सुप्रिया

कक्षा :– बी.ए. द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेम.)

विभाग :– हिन्दी

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

मार्गदर्शक
डॉ. राजेश मिश्र

Date ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐ Topic _____ Page ☐☐☐

देवनागरी लिपि =>

देवनागरी लिपि का प्रयोग सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात के राजा जय भट्ट के एक शिलालेख में हुआ था है। यह लिपि हिंदी प्रदेश के अतिरिक्त महाराष्ट्र व नेपाल में प्रचलित है गुजरात में सर्वप्रथम प्रचलित होने से इस वहां के पंडित वर्ग अर्थात नगर ब्राह्मणों के नाम से इसे नागरी कहा गया। देव भाषा संस्कृत में इसका प्रयोग होने से इसके साथ जो शब्द जुड़ गया। देवताओं की उपासना के लिए जो संकेत बनाए जाते थे उन्हें देवनगर कहते थे। वे संकेत लिपि के समान थे वहीं से इसे देवनागरी कहा जाना लगा।

देवनागरी के व्यंजनों की विशेषता इस लिपि को और वैज्ञानिक बनाती है, जिसके फलस्वरूप क, च, ट, त, प, वर्ग के स्थान पर आधारित है और हर वर्ग के व्यंजन में घोषत्व का आधार भी सुस्पष्ट है जैसे - पहले दो व्यंजन (च, छ) अघोष और घोष तीन व्यंजन (ज, झ, ञ) घोष होते हैं। देवनागरी व्यंजनों को हम प्राणत्व के आधार पर भी समझ सकते हैं, जैसे - प्रथम, तृतीय और पंचम व्यंजन अल्पप्राण और द्वितीय और चतुर्थ व्यंजन महाप्राण होता है। देवनागरी व्यंजनों को हम प्राणत्व के आधार पर भी द्वितीय और चतुर्थ व्यंजन महाप्राण होता है। इस तरह का वर्गीकरण और किसी और लिपि व्यवस्था में नहीं है।

Date Topic Page

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ ⇒

(1) लिपि चिन्हों के ~~ध्वनि~~ ध्वनि के (अनुरूप) अनुसार ⇒

इस लिपि में चिन्हों के द्योतक उसके ध्वनि के अनुसार ही होते हैं और इनका नाम भी उसी के अनुसार होता है जैसे - अ, आ, ओ, औ, क, ख आदि। किंतु रोमन लिपि चिन्ह नाम में आई किसी भी ~~लिपि~~ ध्वनि का कार्य करती है, जैसे - म (अ), ब (क), ल् (य) आदि इसका एक कारण यह हो सकता है कि रोमन लिपि ~~वर्ण~~ वर्णात्मक है और देवनागरी ~~ध्व~~ ध्वन्यात्मक।

(2) लिपि चिन्हों की अवधारणा ⇒

विश्व के किसी भी लिपि में इतने लिपि प्रतीक नही है। अंग्रेजी में ध्वनियाँ 40 के ऊपर हैं किंतु केवल 26 लिपि - चिन्हों से काम होता है। उर्दू में भी ख, घ, ङ, ठ, ढ, ढ़, य, ध, फ, भ आदि के लिए लिपि चिन्ह नहीं हैं इनको व्यक्त करने के लिए उर्दू में 'ह' से काम चलाते हैं। इस दृष्टि से ब्राह्मी से उत्पन्न होने वाली अन्य कई भारतीय भाषाओं में लिपियों की संख्याओं की कमी नहीं है। निष्कर्षतः लिपि चिन्हों की पर्याप्तता की दृष्टि

25

GURU GHASIDAS VISHWAVIDYALAYA

BILASPUR (C.G)

देवनागरी लिपि: सुधार के प्रयास

SESSION: 2022-23

ASSIGNMENT ON:

ADHINYAS KARYA

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

Submitted to:

DR.RAJESH MISHRA

Submitted by:

SURAJ KUMAR BANJARA

DEPAT.OF HINDI

BA 4TH SEM

Topic: देवनागरी लिपि Date Page

देवनागरी भारतीय उपमहाद्वीप में प्रयुक्त ब्राह्मी लिपि पर आधारित है बाएँ से दाएँ आबूगीदा है। यह प्राचीन भारत में पहली से चौथी शताब्दी ईस्वी तक किया गया है। देवनागरी लिपि, जिसमें 14 स्वर और 33 व्यंजन सहित 47 प्राथमिक वर्ण हैं, दुनिया में चौथी सबसे व्यापक रूप से अपनाई जाने वाली लेखन प्रणाली है, जिसका उपयोग 120 से अधिक भाषाओं के लिए किया जा रहा है।

भाषाएँ → अपभ्रंश अवधी भीली भोजपुरी छत्तीसगढ़ी इत्यादि।

(देवनागरी लिपि सुधार के प्रयास)

देवनागरी लिपि के सुधार और उसकी सीमाओं को दूर करने के लिए समय-समय पर सुझाव आते रहे हैं। लेखन और मुद्रण संबंधी जो दोष देवनागरी में विद्यमान थे, उनमें सुधार के कुछ प्रयास व्यक्तिगत स्तर पर किए गए तो कुछ संस्थागत स्तर पर किए गए हैं।

Topic ____ Date ____ Page ____

व्यक्तिगत प्रयास → मुद्रण की समस्याओं की तरफ सबसे पहला ध्यान लेखक संपादक बालगंगाधर तिलक का गया। सन् 1905 ई० में अपने पत्र "केसरी" के लिए उन्होंने कुछ टाइपों को मिलाकर और थोड़े हेरफेर के साथ उनमें कमी करने का प्रयास आरंभ किया। 1926 तक टाइपों की छँटाई करते-करते 190 टाइपों का एक फॉन्ट बना लिया जिसे तिलक फॉन्ट कहते हैं।

इसी दौरान महाराष्ट्र के सावरकर बंधुओं ने स्वरों के लिए 'अ' की बारहखड़ी तैयार की जैसे - अि, अी, अु, अू, अे, अै, ओ, औ जबकि ओ, औ, औ तो चलते ही हैं। वर्धा में इसे कई वर्षों तक प्रयोग में लाया जाता रहा है।

हरिजन सेवकों द्वारा भी इसका काफी उपयोग किया जाता रहा है। श्यामसुंदर दास का सुझाव था कि ङ० एवं ञ के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाए। जैसे गङ्गा पञ्चम आदि के स्थान पर गंगा, पंचम लिखा जाए।

(संस्थागत प्रयास) → देवनागरी लिपि में सुधार की दिशा में व्यक्तिगत प्रयासों के साथ-साथ संस्थागत

Topic ________ Date : Page

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर (छ० ग०)

विषय – भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

निर्देशक – राजेश मिश्रा

प्रस्तुतकर्ता – तेजभान

अनुक्रमांक – 21004125

विभाग – हिन्दी विभाग

कक्षा – चतुर्थ सेमेस्टर

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

Bhatia Ph. 403063

Page No. 01

Roll No.

Date

देवनागरी लिपी और उसकी विशेषताएं

भारत की सबसे पुरानी लिपि ब्राह्मी लिपि है। इसी से देवनागरी लिपि विकसित हुई है। देवनागरी का सर्वप्रथम प्रयोग आठवीं सदी के आसपास के शिलालेखों में मिलता है। दसवीं सदी की नागरी लिपि में अ, आ, घ, म, य, ष और स के सिर दो हिस्सों में बटे हुए मिलते हैं और ग्यारहवीं सदी के आस पास देवनागरी के जो रूप हमे मिलते है वह वर्तमान देवनागरी रूपों से काफी समानता रखते है और बारहवीं शताब्दी से लेकर आज तक नागरी लिपि में काफी सीमा तक एकरूपता चली आ रही है। आज हिन्दी भाषा को लिखित रूप मे व्यक्त करने के लिए देवनागरी लिपि का ही प्रयोग किया जाता है। और इसी को "नागरी लिपि" भी कहा जाता है। परन्तु प्रश्न यह है कि इस लिपि का नाम "देवनागरी" या नागरी कैसे पडा? देवनागरी के नामकरण को लेकर विद्वानों ने अलग-अलग मत व्यक्त किए है। यहां हम उनकी चर्चा एक एक करके करेंगे —

Genius

Page No. 02

Roll No.

Date

(1) कुछ लोग यह मानते हैं कि इस लिपि का प्रयोग प्रारंभ में गुजरात के नागर ब्राह्मण ही किया करते थे इसलिए इसे "नागरी" लिपि कहा गया। बाद में चूंकि संस्कृत भाषा को इसी लिपि में लिखा गया अतः इसे "देवनागरी" कहा जाने लगा, क्योंकि संस्कृत का दूसरा नाम देवभाषा भी है। अतः देवभाषा को जिस नागरी लिपि में लिपिबद्ध किया गया वही लिपि "देवनागरी" लिपि कही गई।

2) कुछ लोगों की मान्यता है कि इस लिपि का प्रचार नगरों में अधिक था अतः नगर की लिपि होने के कारण यह लिपि "नागरी लिपि" कही गई।

3) ललित विस्तर नामक बौद्ध ग्रंथ में कुछ लिपियों का उल्लेख मिलता है। इनमें एक लिपि "नाग" लिपि से विकसित हुई है। परन्तु डा. बार्नेट ने इस मत को अस्वीकार करते हुए कहा कि "नाग" और "नागरी" लिपियां दो अलग-अलग लिपियाँ हैं ये एक नहीं हो सकती।

Page No.

Roll No.

Date

नाम - त्रिलोक वानी

विषय - भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा

रोल.नं. 2100426

टॉपिक - देवनागरी लिपि की विशेषताएँ -

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

ACE

SUBJECT.....

DATE.....

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ :-

(1.) देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है।

(2.) देवनागरी लिपि का आविष्कार ब्राह्मी लिपि से हुआ है।

(3.) देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात के राजा जय भट्ट के एक शिलालेख में हुआ है।

(4.) अनेक भाषाओं की लिपि देवनागरी लिपि है जैसे :- संस्कृत, पाली, हिंदी, मराठी, नेपाली आदि।

(5.) देवनागरी लिपि में कुल 52 वर्ण होते हैं।

(6.) देवनागरी लिपि में स्वर ध्वनियों के उच्चारण में किसी अन्य ध्वनि की सहायता नहीं लेना पड़ती है परंतु व्यंजन के उच्चारण में अन्य ध्वनि की सहायता लेनी पड़ती है। जैसे :- क् + अ = क

(7.) देवनागरी लिपि एक अक्षरात्मक लिपि है यह विशेषता अन्य लिपियों में नहीं पाई जाती है।

SUBJECT.....

DATE.....

(9.) देवनागरी लिपि में व्यवस्थित वर्णमाला है। इस वर्णमाला मे सभी वर्णो को उनकी उच्चारणी विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

(9.) इस लिपि में वर्णों को व्यवस्थित, क्रमबद्ध ढंग से किया गया है।

(10.) देवनागरी लिपि में अक्षरात्मक लिपि का अर्थ होता है कि वर्ण के ऊपर - नीचे या फिर दाएं-बाएं कहीं भी मात्राओं का प्रयोग हो सकता है परन्तु वर्ण का उच्चारण पहले और मात्रा का उच्चारण वर्ण के बाद होगा। जैसे :. मोहन।

(11.) देवनागरी लिपि बायीं से दायीं ओर लिखी जाती है।

(12.) देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताए यह है कि इस लिपि मे जो वर्ण लिखा जाता है वही बोला जाता है। वर्णो को बोलते समय ध्वनियों मे कोई बदलाव नही होता है। एक तरह से हम कह सकते है कि इसके लेखन और उच्चरण मे पर्याप्त एकरूपता और स्पष्टता है।

(13.) देवनागरी लिपि एक ऐसी लिपि है जिसमें सभी ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता होती है।

(14.) देवनागरी लिपि में मूकवर्ण (साइलेंट लेटर) नही होता है। जैसे Knowledge = पढ़ा पर K.W.J मूकवर्ण (साइलेंट लेटर) है।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर(छ.ग.)

नाम - वासुदेव सिंह सोरठे

कक्षा - बी.ए. ऑनर्स चतुर्थ सेमेस्टर

विभाग - हिन्दी

विषय - भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा
(अधिन्यास कार्य)

अनुक्रमांक - 21004127

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

:: प्रस्तुतकर्ता ::
वासुदेव सिंह सोरठे

:: मार्गदर्शक ::
डॉ. राजेश मिश्र

Topic ______ Date ______ Page 1

देवनागरी का नामकरण

भारत की सबसे पुरानी लिपि ब्राह्मी लिपि है। इसी से देवनागरी लिपि विकसित हुई है। देवनागरी का सर्वप्रथम प्रयोग आठवी शती के आसपास के शिलालेखो मे मिलता है दसवी सदी की नागरी लिपि मे अ, आ, घ, म य ष और स के सिर दो हिस्सो मे बँटे हुए मिलते है और 11वी सदी मे सिर की एक लकीर बन जाती है और हर अक्षर की चौडाई के बराबर हो जाता है। इस प्रकार ग्यारहवी शती के आस पास देवनागरी के जो रूप हमे मिलते है वह वर्तमान देवनागरी रूपो से काफी समानता रखते है और 12 12वी शताब्दी से लेकर आज तक नागरी लिपि मे काफी सीमा तक एकरूपता चली आ रही है। आज हिन्दी भाषा को लिखित रूप मे व्यक्त करने के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता है और इसी को नागरी लिपि भी कहा जाता है परन्तु प्रश्न यह है कि इस लिपि का नाम देवनागरी या नागरी लिपि कैसे पड़ा? देवनागरी के नामकरण को लेकर विद्वानो ने अलग अलग मत व्यक्त किए है यहा हम उनकी चर्चा एक एक करके करेंगे -

(1) कुछ लोग यह मानते है कि इस लिपि का प्रयोग आरम्भ मे गुजरात के नागर ब्राह्मण ही किया करते है इसलिए इसे नागरी लिपि कहा गया। बाद मे चूंकि संस्कृत भाषा को इसी लिपि मे लिखा गया अतः इसे देवनागरी कहा जाने लगा क्योंकि संस्कृत का दूसरा नाम देवभाषा भी है। अतः देवभाषा को जिस नागरी लिपि मे लिपिबद्ध किया गया वही लिपि देवनागरी लिपि कही गई।

Topic ______ Date ______ Page 2

(2) कुछ लोगो की मान्यता है कि इस लिपि का प्रचार नगरो मे अधिक था। अतः नगर की लिपि होने के कारण यह लिपि नागरी लिपि कही गई

(3) ललित विस्तार नामक बौद्ध ग्रंथ मे कुछ लिपियो का उल्लेख मिलता है। इसमे एक लिपि नाग लिपि से विकसित हुई है। परन्तु डॉ बार्नेट ने इस मत को अस्वीकार करते हुए कहा कि नाग और नागरी लिपियाँ दो अलग अलग लिपियां है ये एक नही हो सकती

(4) एक अन्य विद्वान श्री आर श्याम शास्त्री की यह मान्यता है कि भारत मे पहले देवताओ की मूर्तियो की पूजा न होकर उनकी सांकेतिक चिह्नो के रूप मे उपासना होती थी।

(5) कुछ विद्वान यह मानते है कि इस लिपि का काशी मे बहुत प्रचलन था। काशी को भगवान शिव नागरी या नगरी कहा जाता था। ~~देवनागरी~~ देवनगर मे प्रचलित लिपि का नाम ही देवनागरी पड़ा

(6) डा धीरेन्द्र वर्मा की मान्यता है कि मध्ययुग मे स्थापत्य कला की अनेक शैलियो मे एक शैली का नाम नागर शैली था इस शैली के अन्तर्गत चौकोर आकृतियां बनाई जाती थी। इधर नागरी लिपि के अक्षरो मे भी चौकोर आकृतियां होती थी। इसी समानता के आधार पर इस लिपि का नाम नागरी पड़ गया।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर
कोनी (छ.ग.)

अधिन्यास कार्य

नाम - विक्रमादित्य

विषय - भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

चतुर्थ सेमेस्टर

बी.ए. हिन्दी (ऑनर्स)

रोल न. 21004129

ई-रोलमेन्ट GGV/21/00229

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

Roll No.

Date

देवनागरी लिपि

देवनागरी लिपि या नागरी लिपि मे कुछ विशिष्ट गुण है। जिसके कारण यह देश के अधिकांश भागो मे प्रयोग की जाती है। अपनी विशेषताओ के कारण ही संविधान सभा द्वारा देवानागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा स्वीकार किया जाता है। उन्नीसवी सदी के मध्य में कलकत्ता हाईकोर्ट के जास्टिस शारदाचरण मित्र ने एक प्रस्ताव रखा था कि भारत की सभी भाषाओ की एक ही लिपि है। नागरी रहे जिससे कि इन भाषाओ मे आदान-प्रदान बढे। इसके लिए उन्होने कलकत्ते मे ही एकलिपि - विस्तार परिषद की स्थापना भी की हालांकि उनका यह प्रयास सफल न हो सका नागरी लिपि की कुछ विशेषताओ के कारण यह संभावना हमेशा बनी रहेगी कि जैसे यूरोपी भाषाओ में रोमन लिपि

Page No. 02

Date

को स्वीकार कर लिया वैसे ही भारतीय भाषाएँ भी नागरी को स्वीकार करें। हालांकि यह संभावना स्वेच्छ और लोकतांत्रिक मूल्यों पर ही आधारित होनी चाहिए देवनागरी लिपि की विशेषताओं को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते है।

Page No. 00

Roll No.

Date

नाम - योगिता

कक्षा - बी.ए. चतुर्थ (सेमेस्टर)

विषय - भाषा विज्ञान

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास

रोल नं. - 21004130

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

Page No. 01

Roll No. Date

देवनागरी लिपि :- देवनागरी या नागरी लिपि में कुछ विशिष्ट गुण हैं जिनके कारण यह देश के अधिकांश भागों में प्रयोग की जाती है। अपने विशेषताओं के कारण ही संविधान सभा द्वारा देवनागरि लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा स्वीकार किया गया। उन्नीसवीं सदी के मध्य में कलकत्ता हाईकोर्ट के जस्टिस शारदाचरण मित्र ने एक प्रस्ताव रखा था कि भारत की सभी भाषाओं की एक ही लिपि नागरी रहे जिससे की इन भाषाओं में आदान प्रदान बढ़े। इसके लिए उन्होंने कलकत्ता में भी एकलिपि विस्तार परिषद की स्थापना भी की हालांकि उनका यह प्रयास सफल न हो सका नागरी लिपि की कुछ विशेषताओं के कारण यह संभावना हमेशा बनी रहेगी कि जैसे यूरोपीय भाषाओं में रोमन लिपी को स्वीकार कर लिया वैसे ही भारतीय भाषाएँ भी नागरी को स्वीकार करे हालांकि यह संभावना स्वेच्छा और लोकतांत्रिक मूल्यों पर ही आधारित होनी चाहिए। देवनागरि लिपि की विशेषताओं को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं।

Page No. 03

Roll No. | Date

(घ) दंत से उच्चरित ध्वनियाँ - त, थ, द, ध, न, स।

(ङ) ओष्ठ से उच्चरित ध्वनियाँ - उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म और अनुस्वार (ं)।

(च) नासिका से उच्चरित ध्वनियाँ - ङ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार (ं)।

(छ) कंठतालु से उच्चरित ध्वनियाँ - ए, ऐ।

(ज) कंठौष्ठ से उच्चरित ध्वनियाँ - ऑ, ओ, औ।

(झ) दंतौष्ठ से उच्चरित ध्वनियाँ - व।

ऐसा माना जाता है कि किसी भी अन्य लिपि में वर्णमाला का इस प्रकार वैज्ञानिक वर्गीकरण नहीं मिलता अक्षरों के क्रम की वैज्ञानिकता से संबंधित एक विशेषता यह भी उल्लेखनीय है। कि इसमें क्रमानुसार पहले स्वर स्वर हैं। कंठ से श्वास सीधे स्वरों के रूप में निकलता है उसके बाद ही व्यंजनों का क्रम है। रोमन लिपि में कोई स्वर कहीं है तो कोई कहीं।

Page No.

Roll No.

Date

अधिष्ठाय कार्य

विषय कार्य - देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास

नाम - योगेश्वर

विभाग - हिन्दी

रोल नः - 21004131

सेमेस्टर - चतुर्थ सेमेस्टर

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय कोनी बिलासपुर छत्तीसगढ़

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

मार्गदर्शक
राजेश कुर

Page No. 1

Roll No.

Date

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास।

हिन्दी व संस्कृत की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण लिपि है। संविधान में इसे राज लिपि का पद प्राप्त है। हिन्दी व संस्कृत का संपूर्ण साहित्य इसी लिपि में मिलता है। पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं का साहित्य भी इसी लिपि में मिलता है। यह लिपि संसार की प्राचीन लिपियों में से एक है। अति प्राचीन लिपि होने पर भी विद्वानों ने देवनागरी लिपि को संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि स्वीकार किया है।

देवनागरी लिपि की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नलिखित है, जो इसे वैज्ञानिक लिपि सिद्ध करती है।

(1) वर्णमाला की पूर्णता :- देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। ब्राह्मी लिपि में लगभग 64 लिपि चिन्ह थे, वही देवनागरी में केवल 52 लिपि चिन्ह है। लेकिन फिर भी लिपि चिन्हों की यह संख्या संसार की अन्य भाषाओं से अधिक है।

Page No. 2

Roll No. Date

अंग्रेजी की लिपि में 26 चिन्ह है, जर्मन भाषा की लिपि में 30 चिन्ह है, यही कारण है कि देवनागरी लिपि में हर ध्वनि को लिखा जा सकता है।

(2) क्रमबद्धता :- देवनागरी लिपि में स्वर और व्यंजनों का क्रमबद्ध रूप में लिखा गया है। पहले स्वर आते है, उसके पश्चात व्यंजन आते है। अंत में संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ, श्र आते है

(3) लिपि चिन्हों का आदर्श वर्गीकरण :- देवनागरी में वर्णों का वर्गीकरण पूर्ण तर्क वैज्ञानिक ढंग से किया गया है। पहले स्वर आते है। उसके पश्चात व्यंजन तथा अंत में संयुक्त व्यंजन उच्चारण स्थान के आधार पर भी वर्णों का आदर्श वर्गीकरण किया गया है।

स्वर -

ह्रस्व स्वर - अ, इ, उ, ऋ
दीर्घ स्वर - आ, ई, ऊ, ॠ
संयुक्त स्वर - ए ऐ, ओ औ,

Page No.

Date

अधिष्ठास कार्य

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
(बिलासपुर छ.ग.)

नाम - योगिता बैगा

कक्षा - बी. ए. (हिन्दी ऑनर्स) 4था सेमेस्टर

विषय - भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा

रोल न. - 21004132

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

[वाक्य परिवर्तन का कार्य]

Page No. 01

Date 15/06/23

वाक्य परिवर्तन का कारण

भाषाविज्ञान में भाषा अपने मूल स्वभाव में प्रवाहमान और परिवर्तनशील होती है। अपने विकास के क्रम में वह विभिन्न परिवर्तनों से गुजरती है। चूंकि भाषा का प्रयोग मनुष्य बहुधा वाक्यों में ही करता है, इसलिए वाक्य - रचना का परिवर्तन होना भी आवश्यक है। वाक्य परिवर्तन के कारणों को निम्नांकित रूपों में वर्णीया जा सकता है।

(1) प्रयोग की नवीनता

प्रयोग की नवीनता के कारण वाक्य रचना पद्धति में परिवर्तन आते हैं। वक्ता या लेखक अपने लेख में नवीनता लाने के लिए नए - नए प्रयोग करते हैं। कुछ वक्ता परस्पर प्रयुक्त हो रहे वाक्यों के पद क्रम में थोड़े बहुत परिवर्तन कर अधिक आकर्षण या प्रभाव पैदा करना चाहते हैं।

उदाहरण के लिए - हिंदी में मात्र पुस्तक का प्रयोग संज्ञा के बाद होता रहा है, लेकिन नवीनता के लिए संज्ञा के पहले इसका प्रयोग होने लगा।

Page No. 02

Date 15/06/23

जैसे - 'मुझे मात्र पुस्तक चाहिए' का 'मात्र पुस्तक चाहिए मुझे' हो जाना। कुछ इसी प्रकार प्रश्नवाचक वाक्यों में भी परिवर्तन हो जाता है।

जैसे - तुम वहाँ जाकर क्या करोगे ? से 'क्या' करोगे तुम वहाँ जाकर में परिवर्तन हो जाना।

(2) अपर या अन्य भाषाओं से निकटता

जिन भाषाओं में साहित्य, प्रशासन और बोलचाल की दृष्टि से परस्पर घनिष्ठता स्थापित हो जाती है, उनके वाक्य - गठन में कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य होता है। एक भाषा - भाषी समुदाय जब दूसरे भाषा - भाषी समुदाय के राजनीतिक प्रभाव में आता है तो उसकी लगभग अनिवार्यता हो जाती है कि वह दूसरे भाषा की वाक्यात्मक संरचना का कुछ ना कुछ अंश ग्रहण करे।

मुगल शासन के प्रभाव के परिणाम स्वरूप आदर के लिए बहुवचन का प्रयोग फारसी से हिंदी में आया।